Vol III Issue I Feb 2013
Impact Factor : 0.2105 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief
H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue.1,Feb. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

स्वातन्त्रोत्तर नाट्य–काव्यों में युगबोध

ऋतु

अध्यक्ष (हिन्दी–विभाग)
एस. एम. एस. खालसा लबाणा गर्ल्ज कालेज (बराड़ा) अम्बाला।

सारांश

युगबोध एक व्यापक शब्द है। समकालीन युग के चित्रण के साथ–साथ साहित्यकार का जीवन–दर्शन भी युग बोध में अन्तर्ग्रंचित रहता है। इसके अन्तर्गत मानवीय मेधावी युगीन चिन्तन धाराएँ–व्यक्तितत्ववाद, समाजवाद, साम्यवाद, गाँधीवाद, मानववाद, आर्दशवाद, यर्थाथवाद आदि सन्निविष्ट रहती हैं। युग के बोध का सम्बन्ध विमर्श शक्ति से है जो विवके तथा बुद्धि से नियत है। बोध के स्तर पर युग की अभिव्यक्ति एवं समुन्नत भावबोधता का प्रतिफलन ही युग बोध है। इस प्रकार युगबोध में साहित्यकार के युगद्रष्टा और युगस्रस्त दोनों ही समहित रहते हैं।

प्रस्तावना

युग द्रष्टा रूप में साहित्यकार अपने विविधपर्णी युगीन परिवेश की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक विचारणाओं और स्थापनाओं का अवलोकन कर उन्हें अपने साहित्य में स्थान देता है, परन्तु सामयिक परिवेश को साहित्य में प्रतिच्छायित कर देने भर से उसके कर्त्तव्य खत्म नहीं हो जाते। वह मानवीय परिप्रेक्ष्य में भावात्मक एवम् वैचारिक स्तर पर उनके गुण दोषों की मीमाँसा करता है। ये जीवन निर्देशक तत्व जिन्हें कवि द्वारा स्थापित आदर्श या सिद्धांत भी कहा जा सकता है। ये ही कवि दर्शन कहलाते हैं, इस रूप में कवि युग को नई दिशा, नया बोध, और नयी उमंगें देता है। यह कवि का सर्जक रूप है।

स्वातन्त्रयोत्तर नाट्य काव्यकारों ने समसामयिक युग की राजनीतिक विचारणाओं, सामाजिक विसंगतियों और नैतिक मूल्यों का चित्रण करने के साथ–साथ स्वस्थ जीवन–मूल्यों की स्थापना की दिशा में स्तुव्य प्रयास किया है। धर्मवीर भारती ने कहा है कि – ''पर एक नशा होता है–अंधकार के गर्जते महासागर की चुनौति को स्वीकार करने का, पर्तताकार लहरों से खाली हाथ जूझने का, अनमापी गहराईयों में उतरते जाने का। कुण्ठा, निराशा, प्रतिशोध, विकृति, कुरूपता, अंधापन – इन सबसे हिचकिचाना, क्या इन्हीं में सत्य के दुर्लभ कण छिपे हुए हैं, तो इनमें क्यों नहीं न निडर धसूँ। इनमें धँसकर भी मैं मर नहीं सकता।''

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता : स्वतन्त्रता प्राप्ति के लगभग एक शताब्दी के संघर्ष में हमने स्वतन्त्रता के उपरान्त कुछ सामाजिक मर्यादाओं का और नैतिक मूल्यों की स्थापना का सुनहरा सपना देखा था, परन्तु आजादी के पश्चात ही मूल्य–मर्यादाहीनता का एक ऐसा युग अवतरित हुआ जिसमें हमारे सारे सपने ध्वस्त हो गए। महात्मा गाँधी जी की हत्या कर दी गयी। उनकी हत्या से मानव मूल्यो की आस्था को गहरा आघात लगा। नेताओं ने अपनी लोक प्रियता के महत्व को अपनी पद से और प्रतिश्ठा से आँकना शुरू कर दिया। राजनीति ''देवकन्या की नहीं, विशकन्या की आत्मजा'' बन कर रह गई।''

पैसे के बल पर चुनाव जीते जाने लगे। नेताओं के नकली चेहरों से जनता में घोर निराशा का जन्म हुआ। धर्मवीर भारती ने इन राजनीतिक विकृतियों के चित्रण के द्वारा ही अपनी कृति का मंगलाचरण किया है–

''सत्ता होगी उनकी
जिनकी पूँजी होगी
जिनके नकली चेहरे होंगे
केवल उन्हें महत्व मिलेगा
राजशक्तियाँ लोलुप होंगी
जनता उनसे पीड़ित होकर
गहन गुफाओं में छिप–छिप कर दिन काटेगी।

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता नागरिक का मौलिक अधिकार है। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का प्रश्न इतिहासकार के स्वतन्त्र लेखन से जुड़ा होता है, अनेक बार सरकार साहित्यकार को शारीरिक यंत्रणाएं देने में भी संकोच नहीं करती। महाप्रस्थान में युधिष्ठिर ने भी लेखक की स्वतन्त्रता को संकेतित किया है–

सम्भव है अर्जुन
यह सत्ताधारी
यह राजव्यवस्था
एक दिन प्रत्येक व्यक्ति के भीतर विचार शून्यता का अधकारागार निर्मित कर दे

Title : *स्वातन्त्रोत्तर नाट्य–काव्यों में युगबोध*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *ऋतु* **yr:2013 vol:3 iss:1**

प्रत्येक व्यक्ति
बंद ताले की भांति कर दिया जाये
जिसकी ताली
राजकोश में जमा कर दी गई हो।

कुछ सत्ताधारी इतने मोहान्ध होते हैं कि वे इतिहास को अपना भाविष्यिक भोग समझते हैं। राज्य की निरकुंशता को चुनौती देने के लिए लेखन की स्वतन्त्रता बनी रहनी चाहिए और लेखक को सम्मान भी मिलना चाहिए। इसी प्रकार इतिहास वर्तमान के पास भविष्य की धरोहर है। स्वातन्त्रयोत्तर युग के नाट्य काव्यकारों ने आधुनिक राजनीतिज्ञों की स्वार्थ परायाणता और दोहरे मापदण्डों की भी भर्त्सना की है। आज राजनीतिज्ञों का एक मात्र लक्ष्य सत्ता प्राप्ति रह गया है। सत्ता प्राप्त कर लेने पर शासक की वास्तविकता का पता चलता है। प्रजा का उससे मोह भंग होता है। आज राजनेताओं का नैतिक स्तर इतना गिर चुका है कि जनता को उनके प्रत्येक कार्यों में व्यक्तिगत स्वार्थ की दुगन्ध आती है। उनका जनदरबार लोकराज, सभा सोसायटी में आवागमन सब कुछ सप्रयोजन होता है–

''है आता नहीं राजकुल यों अनचाहे ही
अपनी जनता के बीच
प्रजा के आँगन में।''

युद्ध आधुनिक युग की एक ज्वलन्त अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। इस शताब्दी के पूर्वाध में समूचे विश्व ने दो विश्व युद्धों के भीषण परिणामों को भोगा है। फिर भी आज प्रत्येंक देश ने अपनी सुरक्षा के नाम पर आणविक अस्त्र–शस्त्रों का अपार भंडार एकत्रित कर रखा है। आज का कवि विश्व के इस युद्धोन्माद से चिन्तित है। उसने युद्धजन्य विध्वंसों को देखा–परखा है तथा अपनी युद्ध–सम्बन्धी समग्र सोच से उत्पन्न निष्कर्षों के आधार पर उसने एक नए युद्ध दर्शन का प्रारूप बनाया है जो पारम्परिक युद्ध–दर्शन और विशेषकर गीता के युद्ध दर्शन से मेल नहीं खाता–

''हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्ग जित्वा वा भोक्ष्यासेमहीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ युद्धाय कृतनिश्चयः।''

निष्कर्षः–

स्वातन्त्रयोत्तर युग के नाट्य कात्यों के एक श्रेष्ठ साहित्यकार की भांति अपने सामाजिक और मानवीय दायित्व के प्रति पूर्णतः समर्पित है। उनके साहितय की समस्त चेतना युगसन्दर्भों से सम्पकृत और सप्रेरित है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देशवासियों की प्रजातान्त्रिक आस्था आहत हुई है। प्रजा और राज्य के तथा व्यक्ति और समाज के आपसी सम्बन्ध बिगड़े हैं। मूल्य कलैण्डर की तारीखों से बदले हैं, मानवीय आस्था टूटी है और महाशक्तियों के युद्धोन्माद से मानवता की अस्मिता का संकट गहराया है। इसके साथ ही इन नाट्य काव्यकारों ने युग सापेक्ष सांस्कृतिक आदर्शों और जीवन–मूल्यों का दीप जलाकर आधुनिक युग के तमसावृत परिवेश को प्रकाशमान करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। इस प्रकार ये नाट्य काव्य आधुनिक युग बो के विविध आयामों को संस्पर्षित किए हुए हैं।

1.धर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ. 03
2.महाप्रस्थान, पृ. 115
3.घर्मवीर भारती, अंधायुग, पृ. 13
4.महाप्रस्थान, पृ. 116
5.एक और कौन्तेय, पृ. 47
6.श्रीमद्भपवत गीता, अध्याय–2, 2 लोक 37

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net